उपसंहार

हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य के लेखन की शुरुआत साहित्य की एक बड़ी उपलब्धि है। क्योंकि हिन्दी साहित्य में कथा साहित्य के माध्यम से ही भावनात्मक काव्य के समानांतर विचारात्मक गद्य के लेखन का आरंभ होता है। गद्य के माध्यम से साहित्य में विचारों का प्रवेश एक बड़ी साहित्यिक क्रांति थी। इस वैचारिक क्रांति के साथ ही साहित्य के केंद्र में समाज, मनुष्य व उसके जीवन से जुड़े विविध दृष्टिकोण स्थापित होते है। और साहित्यकार समाज के आदर्श की अपेक्षा यथार्थ को चित्रित करने लगता है। समय के साथ यह प्रवृति लगातार सघन होती चली आयी और अन्य प्रवृतियाँ पीछे छूटती चली गयी। और धीरे-धीरे गद्य साहित्य में कई तरह की विचारधाराए व कई तरह के आंदोलन चल निकले। और आज का समय हिन्दी साहित्य में प्रवृतियों से अधिक विमर्शों का समय है। इन विमर्शों में आत्मकथा के बाद उपन्यास व कहानी का महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप है। लेकिन सबसे समृद्ध व चर्चित धारा उपन्यास व कहानी की ही रही। और इस धारा में अलग-अलग समय में अत्यंत समृद्ध अनेक साहित्यकार हुए। जिसमें एक प्रमुख नाम कमलेश्वर का भी है। जो अपने वैचारिकी व प्रतिबद्धता के लिए समर्पित साहित्यकार है। जहां वैचारिक, बौद्धिक व प्रतिबद्धतात्मक स्खलन बहुत तेज हो वहाँ पर प्रतिबद्धताओं के साथ ठीके रहना कमलेश्वर जी की सबसे खास प्रवृति है।

कमलेश्वर जी का बचपन अत्यंत कष्टसाध्य बचपन है। उनका बचपन में अभाव, दुख, संघर्ष के अतिरिक्त कभी सुख या आराम नहीं देखा था। साथ ही वे समाज में व्याप्त विसंगतियों को अपने बचपन में देखा व उससे सीखा। निर्णय लेने की क्षमता व्यक्ति को जितना परिस्थितियाँ सिखाती है उतना कोई और नहीं। परिस्थितियाँ ही व्यक्ति को थपेड़े खिला कर वयस्क कर देती है। और अभाव व्यक्ति को समझ व निर्णय दोनों की शक्ति देता है। निर्णय लेने की क्षमता कमलेश्वर को इन्ही अभावों ने सिखाया। और वे अपने जीवन के हर मोड पर अपना निर्णय करते चले जाते है। पर उनके जीवन में बहुत लंबे समय तक या बहुत दूर तक अभाव, यातना व उपेक्षाएं भी चलती रही। उनके प्रारम्भिक जीवन में अन्य तरह के भी अभाव चलते रहे, जैसे पढ़ाई को लेकर या कपड़ों को लेकर या अन्य संसाधनों को लेकर हर जगह अभाव ही अभाव दिखता है। किन्तु कमलेश्वर अपने जीवन के अभाव व संघर्ष से कभी घबराते नही है

बल्कि वे डटकर कर हर परिस्थिति का सामना करते चलते है। और इन सब जटिल परिस्थितियों से कमलेश्वर के व्यक्तित्व का जो निर्माण होता है, वह एक असाधारण व्यक्तित्व बन जाता है। जो अपने पर आ जाए तो चट्टान की तरह कठोर है और सरलता पर आ जाए तो पानी की तरह सरल है। उनका मनुष्य के प्रति विशेष अनुराग है। अपनो के प्रति स्नेह है। अपने लिए स्वाभिमान है। दूसरों की लड़ाई लड़ने का जज्बा है। सही व गलत को पहचानने की निष्पक्ष दृष्टि है। सही को सही व गलत को गलत कहने का अदम्य साहस है। अपने विचारों पर दृढ़ रहने का संकल्प है। अपने विचारों व लेखन की प्रतिबद्धता से उन्हे कोई समझौता नही है। प्रकृति से उन्हे अगाध प्रेम है। कर्तव्य व ईमानदारी उनके अपने मूल्य है। इन सब मूल्यों के मिश्रण से कमलेश्वर के व्यक्तित्व का निर्माण होता है। जो निष्कपट व निष्कलुष है।

किसी भी लेखक या कलाकार कि सफलता का कारण उसका अपने विषय की दक्षता के साथ उसका सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि आदि के समझ पर भी बहुत कुछ निर्भर करता है। और साहित्य मे सामाजिक मूल्यों के साथ साहित्यिक मूल्यों की प्रतिबद्धता किसी लेखक को अत्यधिक उचाइयाँ प्रदान करने में मदद करती है। कमलेश्वर अपने विचारों के प्रति प्रतिबद्ध व प्रामाणिक लेखक है। अपने विचारों से वे कभी कोई सुलह समझौता नही करते है। वे लेखन में लेखक को विचारों के साथ प्रतिबद्ध होना ही वे लेखन की कसौटी मानते है। विचारों की फिसलन व लेखकीय विचारों से समझौता वे लेखक व विचार दोनों की मृत्यु मानते है। और बिना वैचारिक प्रीतिबद्धता के लेखन को वे लाभ पूर्ण लेखन मानते है। समाज से समस्याओं से असंबद्ध लेखन को वे निरर्थक लेखन मानते है। मूल्य रहित लेखन को वे लेखन नही मानते है, यही कारण है की वे कई बार अपने समकालीन लेखकों के लेखन का विरोध भी करते है और उसे वे वास्तविक लेखन नही मानते है। उसे वे अवास्तविक लेखन कहते है या लाभपूर्ण लेखन मानते है। पर वे अपने आपको साहित्य के प्रति जिम्मेदार मानते हुए प्रतिबद्ध बने रहते है। अपने लेखकीय दायित्वों के प्रति सतर्क व सावधान है। यह कमलेश्वर का लेखकीय व्यक्तित्व है।

भारतीय समाज सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से अत्यंत विविधताओं वाला समाज है। यहाँ हर समाज की अपनी सामाजिकता है और उसकी अपनी सांस्कृतिक पहचान है। साथ ही इस देश की सामाजिक व सांस्कृतिक बुनावट में गहरी समानताए व गहरी विषमताए भी व्याप्त है। जिसके कारण भारतीय समाज व संस्कृति में अनेकता में एकता दर्शन हमें होते है। यहाँ ग्रामीण, कस्बाई व नागर समाज व संस्कृति के अपने मान-मूल्य है। उनकी अपनी संरचना, उनकी अपनी खूबी व खामियाँ है। इसकी अपनी परम्पराएं है। इसकी अपनी रीति-रिवाज है। रूढ़ियाँ है। लेकिन इन सबके उपरांत उत्सवधर्मिता भारतीय समाज व संस्कृति के वलय में स्थिति है। यह इसकी सबसे अलहदा पहचान है। यह सामाजिक व सांस्कृतिक दोनों है। और यह कई तरह के अंतर्विरोध के बावजूद भी है। मध्यवर्गीय जीवन व उसकी सामाजिक विसंगतियाँ भारतीय समाज में वक्षस्थल की भांति है। जीवन चेतना व सामाजिक विसंगति का निर्माण बहुत कुछ सामाजिक संरचना से निर्मित व उसी पर निर्भर है। सामाजिक संरचना से सामाजिक सोच का निर्माण भी होता है। और इसी सामाजिक संरचना से सामाजिक विसंगतियाँ भी उपजती है। चेतना का निर्माण सामाजिक परिवेश से होता है जबकि विसंगतियों का निर्माण सामाजिक भेद-भाव जनित होता है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में मनुष्य जीवन व समाज को केंद्र में रखकर उसकी समस्याओं पर गंभीर लेखन किया गया है।और परिवर्तित होती मनुष्य व समाज की प्रवृतियाँ उनके उपन्यासों में व्यक्त होती है। मनुष्य का जीवन एक गतिशील जीवन है। उसके पास विचार की शक्ति है। और विचरों में भी मौलिक विचार की शक्ति है। और यह मौलकता उसे अपने परिवेश से प्राप्त होती है। और इससे ही समाज मे नए तरह के विचारों का उदय होता है। इसी मौलिकता व विचारों के कारण समाज में निरंतर परिवर्तन होता रहा है। और यह एक सतत प्रक्रिया है। यह मनुष्य के जीवन तक होती रहने वाली क्रिया है। लेकिन समय व समाज के अनुसार इसी मौलिकता व विचारों के दौरान कुछ ऐसे परिवर्तन भी आते है जो विकृति के तौर पर रेखांकित होते है। आगे चालकर यह विकृतियाँ भले ही हमारे समाज की हिस्सा बने और यह समय तक यह विकृतियाँ ही होती है। इस रूप में कमलेश्वर के उपन्यासों में मनुष्य, समाज व परिवर्तित होती हुई उसकी प्रवृतियो का चित्रण प्राप्त होता है।

सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति की दृष्टि से कमलेश्वर की कहानियाँ में विविधता है। समाज के अलग-अलग कथ्यों को लेकर कमलेश्वर कहानियाँ लिखते है। लेकिन चेतना के स्तर पर वे मध्य व निम्न मध्यवर्ग की चेतना का प्रतिनिधितत्व करते है। कमलेश्वर में यह सामाजिक चेतना उनके प्रथम कहानी संग्रह राजा निरबंसिया से लेकर अंतिम कहानी संग्रह तक फैली हुई है। कमलेश्वर के यहाँ मध्यवर्गीय चेतना का जो रूप निकालकर सामने आता है वह एक कुंद चेतना है। जिसमे गतिशीलता का अभाव है। उसकी चेतना में गतिशीलता नहीं बल्कि रूढ़ियाँ ही रूढ़ियाँ खामोशी से फैली हुई है। और मध्यवर्गीय चेतना के दोहरे-तिहरे आयाम है। यह कभी बिल्कुल निर्णायक व बेबाक नहीं है। बल्कि वह लिजलीजी मानसिकता से भरा हुआ है। उसकी चेतना में वह निर्णायक शक्ति व कठोरता नहीं है जो उसे निर्णायक की स्थिति में स्थापित कर सके।

कमलेश्वर के कहानियों व उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा के द्वन्द्व का अध्ययन भी किया गया है। आधुनिकता के संदर्भ में अक्सर भारतीयों का यह मानना है कि यह पश्चिम की चीज हैं। पश्चिम की विचारधारा है। यह पश्चिम से आयायित है। अगर यह बात सत्य है तो क्या हम यह मान ले कि भारत में कभी कोई नयी चीज, नयी बात व नयें विचारों का उदय नहीं हुआ है। और भारत में जो कुछ भी नया है सब पश्चिम से आयायित है। यह भारत के ज्ञान-विज्ञान से लेकर चिंतन परंपरा उसके नवीन उद्भावना पर आदि पर एक प्रश्न चिन्ह हैं। और इसके साथ ही यह भी प्रश्न उठता है कि क्या भारत की समृद्ध ज्ञान-विज्ञान, चितन की परंपरा आधुनिक कल मे आकर सूख जाती है। नहीं ऐसा बिल्कुल नहीं है। भारत की आधुनिकता भारत में ही विकसित हुई है। और इसके तमाम सबूत हमारे पास हैं। जैसे कि यदि हम सिंधु घाटी सभ्यता की बात करें तो यह सभ्यता अपने समय की सबसे उन्नत सभ्यता थी। विश्व में इससे ज्यादा विकसित दूसरी कोई सभ्यता नहीं थी। यह हमारी उन्नति का प्रतीक हैं। इसके बाद यदि हम कबीर नानक रैदास नामदेव गांधी टैगोर राजाराम मोहन राय विवेकानंद केशवचन्द सेन एनी बेसेंट अंबेडकर आदि महापुरुषों को देखे तो अपने समय में बड़े-बड़े परिवर्तन लाए। और कोई भी परिवर्तन समाज के सामाजिक संरचना के भीतर से ही होता हैं। और सब महापुरुष भारतीय समाज के संरचना के भीतर से ही परिवर्तन कर रहे है। उसके भीतर समय

के साथ बदलते हुए नयें विचारों का सृजन कर रहे है। समाज को नयें विचारों से सुसज्जित कर रहे है। नयें समाज का निर्माण कर रहे है। यह सब किसी भी अर्थ में आधुनिकता से कम नहीं है। और ये सब जीतने भी महापुरुष है इन सबके विचार अपने मौलिक विचार है। या भारतीय ज्ञान परंपरा में जो सर्वश्रेष्ठ है उसे लोगों तक ले जाने का काम करते है। इन महापुरुषों के द्वारा समाज मे जो परिवर्तन लाया गया यह अपने आप में बहुत बड़ी आधुनिकता थी। और यही सच्ची भारतीय आधुनिकता है। इससे इतर पश्चिमी खान-पान, वेशभूषा, बात व्यवहार, जीवन के दूसरे पक्षों आदि का जो प्रभाव हम पर हुआ यह पश्चिम की बढ़ती हुई सभ्यता का प्रभाव है। इसे हम भारत की आधुनिकता का हिस्सा नहीं कह सकते। और यदि इसे ही हम भारत की आधुनिकता कहते है तो फिर हमारे महापुरुषों के द्वारा समाज में किए गए सुधार, भारतीय ज्ञान-विज्ञान की परंपरा सब पर प्रश्न वाचक चिन्ह है कि फिर यह क्या है। या यह सब किसी काम का नहीं है। उसका कोई मूल्य नहीं है।

कमलेश्वर की कहानियों व उपन्यासों में आधुनिकता व परंपरा का द्वन्द्व कई दृष्टियों से उभरकर सामने आता है। लेकिन इस द्वन्द्व में कमलेश्वर कहीं भी संकीर्ण नहीं होते है। एक लेखक जो समाज को एक दिशा देता है। समाज को विचार देता है। उसे अपने समाज के अच्छे-बुरे की चिंता होरी है। वह एक स्वस्थ्य समाज के निर्माण की पक्षधरता करता है। तब वह किसी भी तरह के अतिवादों से बचता है। और तमाम अवरोधों के बावजूद वह अपने लेखन में एक संतुलन की दरकार करता है। कमलेश्वर भी यही करते है। समाज उस समय भी और आज भी कई तरह के अवरोधों से बधा हुआ है। लेकिन इन अवरोधों को न तो एक झटके में तोड़ा जा सकता है और न ही एक झटके में इनसे अलग हुआ जा सकता है। बल्कि इनके साथ हमे संतुलन बना कर चलना पड़ता है। और किसी बी द्वन्द्व की स्थिति में यही किया जाता रहा है। कमलेश्वर भी यह करते है।

विभाजन के संदर्भ में कमलेश्वर की प्रासंगिकता तब तक रहेगी जब तक इस दुनियाँ में नफरत व नफरत का कारोबार रहेगा। जब तक इस दुनियाँ में जाति, धर्म, मजहब, संप्रदाय के नाम पर लोगों का कत्ल होता रहेगा, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक राजनीति होती रहेगी, जब तक धार्मिक सांप्रदायिक हत्याएं होती रहेगी, जब तक युद्ध व विश्व युद्ध होते रहेगे, जब तक वर्चस्व की लड़ाइयाँ चलती रहेगी, जब तक मनुष्य अमानवीय बर्बर होता रहेगा, जब तक विश्व में यूक्रेन-रशिया, तालिबान, रहेगा, जब तक किसी भी तरह के भेदभाव आधारित जोर-जुल्म, अत्याचार, दमन-शोषण,, हत्या,बलात्कार, लूट, आगजनी, बमबारी,परमाणु बम, अणुबम, और जब तक आततायी शक्तियों द्वारा स्त्रियों की अस्मत लूटी जाती रहेगी तब तक कमलेश्वर व कमलेश्वर जैसे लेखक व उनका लिखा हुआ साहित्य प्रासंगिक रहेगा। कितने पाकिस्तान विश्व में भाईचारे, एकता, समन्वय, सामंजस्य, प्रीति आदि को स्थापित करने की अपील करती हुई किताब है। विश्व से नफरत, द्वेष, ईर्ष्या, हत्या, लूट, बलात्कार, हिन्दू-मुस्लिम आदि का विरोध करती है। और वह मनुष्यता की बात करती है और जब विश्वस्तर पर जब लगातार मनुष्यता का ग्राफ गिर रहा हो तो ऐसे में इसकी अपील करने वाली किताब व लेखक निसन्देह प्रासंगिक व महत्वपूर्ण हो जाता है। और एक लेखक की एक उपलब्धि यह भी होती है कि वह किस प्रकार के कालखंड में प्रासंगिक व उपयोगी है। जब विश्व में एक तरह का नरसंहार मचा हुआ तो ऐसे में जब कोई लेखक उसके खिलाफ खड़ा हुआ नजर आता है तो वह लोगों को संबल देता हुआ नजर आता है। और वह जितनी दूर तक और जब तक लोगों को संबल देता रहेगा तब तक प्रासंगिक रहेगा। कालजयी रचनाएं शाश्वत सत्य व मूल्यों पर लिखी गई होती है, इसलिए वे काल का अतिक्रमण कर कालजयी बन जाती है। कमलेश्वर इस अर्थ में कालजयी साहित्यकार है। और प्रासंगिक भी है।

कमलेश्वर के कथा साहित्य में स्त्री विषयक अनेक दृष्टिकोण मिलते है। कई बार वह बहुत परंपरागत विचार रखने वाली स्त्री तो कई बार एकदम आधुनिक ढंग की स्त्री है तो कई बार इन दोनों के मिलिजुली स्वभाव वाली स्त्री है। जैसे यदि हम देवा की माँ कहानी की बात करें

तो देवा की माँ परंपरगत विचार रखने वाली स्त्री के रूप में हमरे सामने आती है। यानि उसका पति दूसरी शादी कर लिया है और इससे कोई वास्ता नहीं रखता है फिर भी देवा की माँ उसे ही अपना पति मानती है और अपना उसके नाम से सुहाग भी रखती है। यानि कि एक भोली-भाली साधारण सी स्त्री। और एकदम आधुनिक किस्म की स्त्री के तौर पर कई स्तरीय कमलेश्वर के कथा साहित्य में जैसे तीसरा आदमी की चित्रा, डाक बंगाल की इरा, समुद्र में खोया हुआ आदमी की तारा, काली आंधी की मालती, वही बात की समीरा, राजा निरबंसिया की चन्दा आदि लोक-लाज के डर भय से मुक्त है और अपने जीवन को जीना चाहती है बिना किसी कम से कम सामाजिक दबाव के या सामाजिक दबाव की निरर्थकता जैसे इनको पाता हो और ए उसे ठुकरा देती है। एक सड़क सत्तावन गालियां की बंसिरि बहुत कुछ एक मिली जुली स्वभाव वाली स्त्री है। कहीं उसके मन में बहुत विद्रोह है तो कहीं किसी खोने में बहुत कुछ चुपचाप स्वीकार कर लेने का बोध भी उसमे है।

इस तरह से कमलेश्वर के कथा साहित्य के विविध आयामों का अध्ययन इस शोध कार्य में किया गया है। कमलेश्वर के विचारों का सही विश्लेषण करने की कोशिश की गई है। उनकी बातों को, उनके विचारों को उसी संदर्भ में देखने, समझने व परखने की कोशिश है जिस रूप में कमलेश्वर उसे दिखाना चाहते है। अगर लेखन के मंतव्यों तक हम पहुँच सके हो और उसे सभी संदर्भ में रख सके हो तो यही इस शोध कार्य की सार्थकता होगी। और यही लेखक व शोधकार्य के साथ न्याय भी होगा। मैं अपनी तरफ से इस विचार को सार्थक करने की पूरी कोशिश की है। सफलता-असफलता कितनी अर्जित हुई है। यह पठनीयता से तय हो सकेगा।